कक्षा में भारत

विजयाश्री पीएस

शैक्षिक वर्ष समाप्त होने को था और कर्नाटक राज्य की पाँचवीं कक्षा की पर्यावरण विज्ञान की पाठ्यपुस्तक इस बात का इन्तज़ार कर रही थी कि बच्चे इसके पृष्ठों को पूरा पढ़ लें।

मैं *हमारा भारत – भौतिक विविधता* शीर्षक पाठ को पढ़ाने के लिए हमेशा उत्साहित रहती हूँ क्योंकि यह भारत के विभिन्न क्षेत्रों के ऐतिहासिक स्थानों और वहाँ की वनस्पतियों तथा जीवों की विशेषताओं को दर्शाता है। ऐसे ही एक अनुभव का लेखा-जोखा यहाँ प्रस्तुत किया गया है।

पाठ्यपुस्तक के प्रत्येक अध्याय की शुरुआत में उस पाठ के विशेष उद्देश्यों के बारे में जानकारी दी गई होती है। इस अध्याय के लिए जो उद्देश्य दिए गए हैं वे इस प्रकार है कि इसमें *विद्यार्थी भारत की अनूठी प्राकृतिक स्थिति के बारे में जानेंगे*।

इस पाठ का अध्ययन करने के बाद आप,

- भारत के भौतिक मानचित्र को समझेंगे।
- हिमालय पर्वत, पठारों, मैदानों, तटीय मैदानों, नदियों के बेसिन और रेगिस्तान के बारे में जानेंगे।
- समझेंगे कि प्राकृतिक पर्यावरण के कारक लोगों के जीवन को कैसे प्रभावित करते हैं।
- कला और वास्तुकला पर भौतिक कारकों के प्रभाव को जानेंगे।
- भारत के मौसम और जलवायु की महत्त्वपूर्ण विशेषताओं के बारे में जानेंगे।
- भारत के पौधों और पशुओं के बारे में जानेंगे।

मैं पाठ्यपुस्तक से लैस होकर कक्षा में गई। भारत का भौतिक मानचित्र खुलने की प्रतीक्षा में, कक्षा के कोने में रखा हुआ था। मैंने विद्यार्थियों के पूर्व ज्ञान को समझने की कोशिश करते हुए अपना कार्य शुरू किया। लिहाजा सत्र एक साधारण प्रश्न के साथ शुरू हुआ कि *भारत क्या है*? विद्यार्थियों ने जवाब दिया, *यह हमारा देश है*। फिर मैंने पूछा कि भारत की विशिष्टता क्या है और यह सोचा कि शायद विद्यार्थी अनेकता में एकता के बारे में कुछ बताएँगे क्योंकि मैंने उसी समय नवीं कक्षा को वैसा ही एक पाठ पढ़ाया था। लेकिन मुझे यह देखकर बड़ा आश्चर्य हुआ कि विद्यार्थी चुपचाप बैठे रहे। मुझे लगा कि ये विद्यार्थी अभी छोटे हैं और इसलिए मैंने अपने प्रश्न को बदलकर फिर से पूछा कि आप किन-किन स्थानों पर घूमने गए हो। एक लड़के ने कहा कि वह मैसूर गया और एक लड़की ने कहा कि वह गर्मियों की छुट्टियों में अपने दादा-दादी के घर गई थी। फिर क्या था, कक्षा का हर विद्यार्थी बेहद उत्साह के साथ अपने पारिवारिक भ्रमण और यात्राओं के बारे में बताने को उत्सुक था। उस समय मैंने निर्णय लिया कि मैं इस अध्याय के लिए एक स्पष्ट उद्देश्य के साथ एक प्रारम्भिक गतिविधि करूँगी जिससे विद्यार्थियों को विविधता का अर्थ समझ में आ जाए।

शुरुआत करने के लिए मैंने अपना परिचय दिया और बताया कि मैं कहाँ की रहने वाली हूँ और मेरे घर में कौन-सी भाषा बोली जाती है आदि। इसके बाद विद्यार्थियों ने अपने मूल स्थान और अपनी मातृभाषा के बारे में बताया।

कुल सात विद्यार्थी थे। इसलिए मैंने उन्हें तीन समूहों में बाँटा। मैंने समूहों से चॉक का एक टुकड़ा लेने के लिए कहा और ब्लैकबोर्ड पर तीन विशिष्ट स्थान (प्रत्येक समूह के लिए एक स्थान) चिह्नित किए। समूह के सदस्यों को मेरे द्वारा पूछे गए प्रश्न पर चर्चा करके बोर्ड पर अपने उत्तरों को लिखना था।

प्रत्येक समूह ने बोर्ड पर एक विशिष्ट भाग (उसे अपना स्थान मानते हुए) चुना और प्रश्नों के लिए तैयार हो गए। इसके बाद उन्होंने अपने-अपने

समूहों के लिए एक स्थान का नाम चुना। एक समूह ने बेंगलूरु, दूसरे ने तमिलनाडु और तीसरे समूह ने मैसूर को चुना। ये वे जगहें थीं जिनके बारे में वे जानते थे या जहाँ वे पहले रहते थे। विद्यार्थियों को अपनी चुनी हुई विशिष्ट जगहों के बारे में सभी प्रश्नों के जवाब देने थे।

इस गतिविधि का उद्देश्य इन स्थानों के बीच कुछ विभिन्नताओं का पता लगाना और फिर विविधता की अधिक जटिल धारणा की ओर बढ़ना था। उनसे मेरा पहला प्रश्न था कि *उस जगह की मिट्टी का रंग क्या है*? विद्यार्थी असमंजस में दिखे! मैंने उन्हें अपने-अपने समूहों में चर्चा करके उत्तर देने के लिए कहा। उन्हें कुछ मिनट लगे लेकिन अन्त में सर्वसम्मति से वे अपने उत्तरों के साथ तैयार हो गए। उनके उत्तर इस प्रकार थे कि उस जगह की मिट्टी का रंग लाल है, काला है और भूरा है।

अगला प्रश्न था, *उस जगह पर पानी का रंग क्या है*? शुरू में उन्होंने कहा कि सफ़ेद है। लेकिन थोड़ी जाँच-पड़ताल और प्रोत्साहन के बाद उन्होंने कहा कि पानी का रंग नारंगी, नीला और गहरा भूरा है! तीसरे प्रश्न तक आते-आते विद्यार्थियों का आत्मविश्वास बढ़ने लगा। धीरे-धीरे उन्होंने जो कुछ भी अनुभव किया उसे लिखना शुरू कर दिया क्योंकि उन्हें इस बात की तसल्ली थी कि उनके उत्तरों के आधार पर उनके बारे में कोई राय नहीं बनाई जाएगी। आख़िरी दो प्रश्न उस जगह पर पाए जाने जानवरों और हरी पत्तेदार सब्जियों के बारे में थे।

गतिविधि के अन्त में विद्यार्थियों को यह देखकर बड़ी ख़ुशी हुई कि पूरा बोर्ड उनके उत्तरों से भरा हुआ था, ज़रा-सी भी जगह खाली नहीं थी।

विद्यार्थी इस बात से बेहद प्रभावित हुए कि जो जगहें एक-दूसरे से ज़्यादा दूर नहीं थीं और जिनके बीच यात्रा करने में छह घण्टे से अधिक समय नहीं लगता, उन जगहों में भी कितना अन्तर था। अब मैं देख पा रही थी कि विविधता की धारणा का बीज बोया जा चुका था। इस गतिविधि ने देश की भौतिक विविधता पर पाठ शुरू करने की तैयारी का काम किया था।

हमने इस बात पर भी चर्चा की कि भोजन, मौसम, मिट्टी का रंग, पानी का स्वाद आदि की दृष्टि से यह संसार कितना अलग है। इस बिन्दु पर आकर हमने तमिलनाडु, बेंगलूरु, मैसूर और कावेरी नदी का पता लगाने के लिए भारत के नक़्शे का उपयोग किया। विद्यार्थियों को राष्ट्रीय सीमाओं और देशों के बीच की सीमाओं के सीमांकन का बोध भी हुआ।

मैं आगे आने वाले एक बड़े पाठ की शुरुआत के लिए एक सन्दर्भ स्थापित करके उस दिन की कक्षा को समाप्त करना चाहती थी। पाठ्यपुस्तक देश के विभिन्न क्षेत्रों के भौतिक पहलुओं, जलवायु और कला एवं वास्तुकला पर तथ्यात्मक जानकारी प्रदान करती है। मुझे लगा कि पाठ को केवल तथ्यों तक सीमित न रहकर उसके परे जाना चाहिए तथा उसे और अधिक रोचक बनाना चाहिए। विद्यार्थियों को देश में विविधता की सराहना करते हुए विषय के साथ जुड़ना चाहिए। इस गतिविधि के अन्त में वे हमारे देश की विविधता के बारे में और अधिक जानने के लिए उत्साहित नज़र आ रहे थे।

इस गतिविधि ने पृथ्वी की विशालता के बारे में जानने के लिए भी विद्यार्थियों की रुचि और जिज्ञासा बढ़ाई। गतिविधि के बाद कक्षा में बड़े जोशो-ख़रोश के साथ चर्चा हुई और विद्यार्थियों ने भारत के नक़्शे पर शहरों और नदियों के बारे में और ग्लोब पर संसार के अन्य देशों के बारे में जानना चाहा। मेरे आश्चर्य की कोई सीमा न रही जब वे कई दिलचस्प प्रश्न पूछने लगे। सत्र के अन्त में एक लड़की ने पूछा कि अगर हम ज़मीन से दूर जाते जाएँ तो क्या होगा? आख़िर हम कहाँ पहुँचेंगे? और काफ़ी देर से चुप बैठे एक लड़के ने कहा, क्या तुम पृथ्वी से दूर सूरज, चाँद पर जाना चाहती हो? इस बात पर सब हँसने लगे। बच्चों को खुलकर बोलते हुए देखकर मुझे ख़ुशी हुई। मैंने वादा किया कि अगली बार इस चर्चा को आगे बढ़ाएँगे और इस तरह से कक्षा समाप्त हुई।

विजयाश्री पीएस एक स्रोत व्यक्ति हैं और वे बेंगलूरु डिस्ट्रिक्ट इंस्टिट्यूट इनिशिएटिव, अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन के रूरल स्कूल इनिशिएटिव में कार्यरत हैं। उनसे vijayashree.ps@azimpremjifoundation.org पर सम्पर्क किया जा सकता है।

अनुवाद : नलिनी रावल **पुनरीक्षण :** कामिनी उपाध्याय